

শ্রীঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ  
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।  
বেদান্তাচার্যর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি॥

॥শ্রী-কামাসিকাষ্টকম্ ॥

*This document\* has been prepared by*  
**Sunder Kidambi**  
*with the blessings of*  
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্  
**His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam**

---

\*This was typeset using Bengali for T<sub>E</sub>X.

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
॥श्री-कामासिकाष्टकम् ॥

श्रीमान् रेक्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी।  
वेदान्ताचार्यरयो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्रुतीनामुत्तरं भागं रेगरत्याश्च दक्षिणम्।  
कामादधिरसन् जीयात् कश्चिदद्भुत केसरी ॥ १ ॥

तपनेन्द्रिग्नि नयनः तपानपचिनोतु नः।  
तापनीय रहस्यानां सारः कामासिका हरिः ॥ २ ॥

आकठमादिपुरुषं  
कठीररमुपरि कुठितारातिम्।  
रेगोपकठ सप्तात्  
विमुक्त रैकुठ बह्मतिमुपासे ॥ ३ ॥

बन्धुमखिलस्य जन्तोः  
बन्धुर पर्यङ्क बन्ध रमणीयम्।  
विषम विलोचनमीडे  
रेगरती पुलिन केलि नरसिंहम् ॥ ४ ॥

स्य स्थानेषु मरुदणान् नियमयन् स्वाधीन सर्वेन्द्रियः  
पर्यङ्क स्थिर धारणा प्रकटित प्रत्यङ्गुथारस्थितिः।  
प्रायेण प्रणिपेदुषां प्रभुरसौ योगं निजं शिक्षयन्  
कामानातनुतात् अशेष जगतां कामासिका केसरी ॥ ५ ॥

विकस्वर नथ स्वरु ऋत हिरण्य रङ्गः स्थली  
निरर्गल विनिर्गलदुधिर सिन्धु सन्ध्यायिताः।  
अरन्ध्र मदनासिका मनुज पथं रत्नस्य माम्  
अहंप्रथमिका मिथः प्रकटिताहरा बाहरः ॥ ६ ॥

सटा पटल तीषणे सरभसाट्टहासोद्धटे  
स्फुरतक्रुधि परिस्फुटद् भ्रुकुटिकेपि रक्ते कृते।

কৃপা কপট কেসরিন্ দনুজ ডিম্ব দত্ত স্তনা  
সরোজ সদৃশা দৃশা ব্যতিভিষজ্য তে ব্যজ্যতে ॥ ৭ ॥

অযি রক্ষতি রক্ষকৈঃ কিমন্যৈঃ  
অযি চারক্ষতি রক্ষকৈঃ কিমন্যৈঃ।  
ইতি নিশ্চিত ধীঃ শ্রয়ামি নিত্যং  
নহরে বেগবতী তটশ্রযং স্বাম্ ॥ ৮ ॥

ইথং স্তুতঃ সকৃদিহাষ্টভিরেষ পদ্যৈঃ  
শ্রীবেঙ্কটেশ রচিতৈস্ত্রিদশেন্দ্র বন্দ্যঃ।  
দুর্দান্ত ঘোর দুরিত দ্বিরদেন্দ্র ভেদী  
কামাসিকা নরহরির্বিতনোতু কামান্ ॥ ৯ ॥

॥ ইতি শ্রী-কামাসিকাষ্টকম্ সমাপ্তম্ ॥

কবিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে।  
শ্রীমতে বেঙ্কটেশায় বেদান্তপুরে নমঃ ॥